Dr. Kumari Priyanka
HD JAIN COLLEGE ARA

HISTORY DEPARTMENT

Notes for semester 2

शीत युद्ध क्या था वर्णन करें।

शीतयुद्ध विश्व के इतिहास में एक ऐसा युद्ध था, जिसमें शस्त्रों का प्रयोग नहीं हुआ। और ना ही इसमें किसी प्रकार का खुन-खराबा हुआ। यह तो एक ऐसा युद्ध था, जिसका रणक्षेत्र मानव का मस्तिष्क था। यह विभिन्न देशों के संबंधों को घृणा से भर देने वाला युद्ध था।

कुछ विद्वानों ने इस युद्ध की परिभाषा अपने-अपने शब्दों के माध्यम से दिया। जो की इस प्रकार है--

डॉ. एम. एम. राजन के शब्दों में, 'शीतयुद्ध शक्ति संघर्ष की राजनीति का मिला-जुला परिणाम है। दो विचारधाराओं के संघर्ष का परिणाम है। दो प्रकार की परस्पर विरोधी पद्धतियों का परिणाम है। जिसका अनुपात समय और परिस्थितियों के अनुसार एक दूसरे के पूरक के रूप में बदलता रहता है।'

जवाहरलाल नेहरू के अनुसार, 'शीत युद्ध पुरातन शक्ति संतुलन की अवधारणा का नया रूप है। यह विचारों का संघर्ष न होकर दो भीमाकार शक्तियों का आपसी संघर्ष है।

लुई हाले के अनुसार, ' शीत युद्ध परमाणु युग में एक ऐसी स्थिति है जो कि शस्त्र युद्ध से एकदम भिन्न किन्तु उससे अधिक भयानक युद्ध है। यह एक ऐसा युद्ध है जिसने अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान करने के स्थान पर उन्हें उलझा दिया है। विश्व के सभी देश और समस्यांए चाहे वह वियतनाम हो, चाहे कश्मीर या कोरयिा हो अथवा अरब-इजरायल संघर्ष हो, सभी शीत युद्ध के मोहरों की तरह प्रयुक्त किए जाते

रहे। यह युद्ध का वातावरण है- शीत युद्ध वास्तविक युद्ध नहीं है। शीत युद्ध का क्षेत्र विश्व व्यापी है।'

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात विश्व दो गूटों- पूंजीवादी गुट व साम्यवादी गुट मे बंट गया। पूँजीवादी गुट का नेतृत्व अमेरीका व साम्यवादी गुट का नेतृत्व सोवियत संघ कर रहा था। ये दो महाशक्तियों और उनके आपसी सम्बन्धों की अभिव्यक्ति का नाम शीत युद्ध था। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद दोनों महाशक्तियों में वैमनस्य और कटुता बढ़ती गई। दोनों महाशक्तियों में राजनीतिक प्रभुत्व के लिए राजनीतिक प्रचार का संग्राम छिड़ गया। यह एक ऐसा युद्ध था, जिसका रणक्षेत्र मानव मस्तिष्क था। **एन.एन.धर के मत में,** " शीत युद्ध द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अमेरिका एवं रूस के मध्य क्रमशः विकसित उन कटु सम्बन्धों को कहा जाता है जिनके कारण दोनों राष्ट्र परस्पर प्रतिद्वंदी बनकर तीसरे विश्व युद्ध के लिये सम्बध्द हो गये थे।"

शीत युद्ध का रणक्षेत्र मानव मस्तिष्क था। वास्तव में शीत युद्ध, नरसंहार और उसके पड़ने वाले प्रभाव से बचने तथा युध्द के लक्ष्य को प्राप्त करने की नवीन कला थी जिसमें कागज के गोलों, पत्र-पत्रिकाओं, अखबारों तथा रेडियो के प्रचार साधनों से लड़ा जाने वाला युद्ध था। शीत युद्ध सोवियत संघ-अमेरिका आपसी सम्बन्धों की वह स्थिति थी जिसमें दोनों पक्ष शान्तिपूर्ण राजनयिक सम्बन्ध रखते हुए भी परस्पर शत्रुभाव रखते थे तथा शस्त्र-युद्ध के अतिरिक्त अन्य सभी उपायों से एक-दूसरे की स्थिति और शक्ति को निरन्तर दुर्बल करने का प्रयत्न करते थे। वस्तुतः शीत-युद्ध एक प्रचारात्म युद्ध था जिसमें एक महाशक्ति दूसरे के खिलाफ घृणित प्रचार का सहारा लेती थी।